International Journal in Management and Social Science
Volume 9 Issue 01,January 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 6.319
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

संत परंपरा में तारातरा मठ का स्थान

डॉ. आदर्श किशोर

सह आचार्य (हिंदी)

राजकीय महाविद्यालय, बाड़मेर

हिंदी में 'संत' शब्द व्यापक रूप में तात्पर्य है – पवित्रात्मा, परोपकारी, सदाचारी। 'हिंदी शब्द सागर' में संत का अर्थ दिया गया है - साधु, त्यागी, महात्मा, ईश्वर भक्त धार्मिक पुरुष। 'मानक हिंदी कोष' में संत शब्द को 'संस्कृत संत' से निष्पन्न मानते हुए उसका अर्थ किया गया है – साधु, संन्यासी, विरक्त या त्यागीपुरुष, सज्जन, महात्मा, परम धार्मिक और साधु व्यक्ति। 'आप्टे' के कोश में संत शब्द के दस अर्थ मिलते हैं जिनमें मुख्य हैं – सदाचारी, बुद्धिमान, विद्वान, साधु, पवित्रात्मा आदि।[1]

व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'संत' शब्द संस्कृत के 'सन्' का बहुवचन है। सन् शब्द भी अस्भुवि (अस=होना) धातु से बने हुए 'सत' शब्द का पुल्लिंग रूप है जो 'शतृ' प्रत्यय लगाकर प्रस्तुत किया जाता है और जिसका अर्थ केवल 'होनेवाला' या 'रहने वाला' हो सकता है। इस प्रकार 'संत' शब्द का मौलिक अर्थ 'शुद्ध अस्तित्व' मात्र का बोधक है। डॉ. पीतांबरदत्त बड़थवाल के अनुसार 'संत' शब्द की संभवतः दो प्रकार की व्युत्पत्ति हो सकती है। या तो इसे पालिभाषा के उस 'शांति' शब्द से निकला हुआ मान सकते हैं जिसका अर्थ निवृत्ति मार्गी या विरागी होता है अथवा यह उस 'सत' शब्द का बहुवचन हो सकता है जिसका प्रयोग हिंदी में एकवचन जैसा होता है और इसका अभिप्राय एकमात्र सत्य में विश्वास करने वाला अथवा उसका पूर्णतः अनुभव करने वाला व्यक्ति समझा जाता है इसके अतिरिक्त 'संत' शब्द की व्युत्पत्ति शांत, शांति, सत् आदि से भी बताई गई है। कुछ विद्वानों ने इसे अंग्रेजी के शब्द सेंट (Saint) समानार्थक उसका हिंदी रूपांतर सिद्ध करने का प्रयास किया है। 'तैत्तरीय उपनिषद' में इसका प्रयोग 'एक' एवं अद्वितीय परमतत्व के लिए भागवत में इसका प्रयोग 'पवित्रता' के अर्थ में किया गया है और बताया गया है कि संसार को पवित्र करने वाले तीर्थों को भी संत पवित्र करने वाले होते हैं। एक अन्य विद्वान मुनिराम सिंह ने 'पहाड़दोहा' में संत को 'निरंजन' अथवा 'परमतत्व' का पर्याय माना है।[2] कबीरदास के अनुसार जिसका कोई शत्रु नहीं है, जो निष्काम है, ईश्वर से प्रेम करता है और विषयों से असंपृक्त रहता है, वही संत है।

निरबैरी निहकामना, साई सेतीनेह।

विषया सूं न्यारा रहै, संतन के अंग एह॥

संत कवि दूलनदास संतों को उपवन के पुष्प समान मानते हैं। जिस प्रकार उपवन का एक पुष्प दूसरे से कोई अंतर नहीं रखता और सर्वत्र सुगंधित विकीर्ण करता है वैसे ही संत अमृतमयी वाणी से धरा-धाम पर सुख-शांति लाता है।[3]

दुलन साधु सब एक हैं, बाग फूल समतूल।

कोई कुदरती सुबास है और धूल-धूल के फूल॥

बालकांड के अनुसार संत का चरित्र कपास के समान शुभ्र, नीरस (सांसारिक रसों से विरक्त) विशद (उज्ज्वल, निर्विकार) और गुणमय होता है। वे स्वयं कष्ट सहकर दूसरों के कष्टों का निवारण करते हैं। संत इस संसार में जंगमतीर्थ सदृश होते हैं, जो सर्वत्र सदैव सभी प्राणियों को सुलभ रहते हैं तथा उनके क्लेश, कष्टों का निवारण करते हैं। उनकी दृष्टि में सभी प्राणी एक समान होते हैं। वे सभी का केवल हित ही करते हैं, अहित किसी का नहीं करते। जैसे हाथों में रखे हुए पुष्प दोनों हाथों को समान रूप से सुगंधि प्रदान करते हैं, वे दाहिने बाएं का भेद नहीं करते। संत और सज्जन में मुख्य भेद यह होता है कि संत का वियोग दुखदायी होता है और असंत का मिलन। एक कमल के समान सुखद होता है दूसरा जोंक के समान शोषक। एक अमृत के समान जीवन रक्षक होता है और दूसरा विष के समान प्राणनाशक। इसी प्रकार अरण्यकांड में श्रीराम-संवाद के माध्यम से संतों का लक्षण-निरूपण किया गया है। नारद प्रश्न करते हैं I

संतन के लच्छन रघुवीरा।।

कहहुं नाथभव भंजन भीरा॥

और इसके उत्तर में श्रीराम कहते हैं कि संत वह है जिसने षट विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मत्सर आदि) पर विजय प्राप्त कर ली हो, जो निष्पाप और निष्काम हो, सांसारिक वैभव से विरक्त, इच्छारहित और नियोगी होए दूसरे का सम्मान करने वाला मदहीन हो, अपने गुणों के श्रवण करने में संकोच करता हो और दूसरों के गुण-श्रवण में आनंदित होता हो, कभी नीति का परित्याग न करता हो, सभी प्राणियों में प्रेम-भाव रखता हो। श्रद्धा, क्षमा, दया, विरति, विवेक आदि का पुंज हो।

गोस्वामी जी की यह भी मान्यता है कि परम प्रभु संतों और देवताओं के कार्य निमित्त मानव शरीर धारण करते हैं संतों का दर्शन भगवद् अनुग्रह से ही होता है। दरिद्रता सबसे बड़ा दुख है और संत-समागम के समान कोई सुख नहीं है।[4]

नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं।
संतन मिलन सम सुख जग नाहीं।। (उत्तरकांड)

सत्संग अर्थात सत का संग, जहां 'सत्' का अर्थ है परम सत्य अर्थात् ईश्वर तथा संग का अर्थ है - साधकों अथवा संतों का सान्निध्य । संक्षेप में, सत्संग से तात्पर्य है ईश्वर के अस्तित्त्व को अनुभव करने के लिए अनुकूल परिस्थिति । ईश्वर का नामजप करना आरंभ करने के उपरांत साधना का यह अगला चरण है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम नामजप करना छोड दें । इसे नामजप के साथ करना चाहिए । नियमित रूप से समविचारी व्यक्तियों के साथ रहने से सहायता ही होती है । सत्संग में सूक्ष्म स्तर पर व्यक्ति को चैतन्य का लाभ प्राप्त होता है । सत्संग से प्राप्त अधिक सात्त्विकता साधना में सहायक होती है । हमारे आस-पास के राजसी एवं तामसी घटकों के आध्यात्मिक प्रदूषण के कारण ईश्वर तथा साधना के विषय में विचार करना भी कठिन हो जाता है ।

सभ्यता के प्रारंभ से ही मानवीय मूल्यों, प्रेम, सहिष्णुता, त्याग और सद्व्यवहार के मूल्यों का संचार करने वाले साधु-संन्यासी, संत और फकीर-औलिया भारत-भूमि पर अवतरित होते रहे हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व त्याग कर सारा जीवन मानवता के कल्याण के लिए लगा दिया। यहाँ की मिट्टी में उन महान वीरों और संतो के पदचिह्न भी मिलते हैं जिन्होंने धर्म और सच्चाई की राह पर चलते हुए भारतीय सभ्यता को फर्श से अर्श की ऊंचाई दी और अपने जिस्म का कतरा कतरा इस मिट्टी में मिलाके इसे पूजने योग्य बना दिया।[5]

भारत की आज़ादी को किसी ना किसी खतरे ने घेरे रखा हैI कभी विदेशियों का हमला तो कभी अधर्म का राज। भारतीय सभ्यता का प्रसार जिस तेजी से हुआ और जिस तरह अकूत धन-संपदा और वैभव से परिपूर्ण हमारा इतिहास रहा है उसी गति से विदेशी आक्रांताओं ने भारत को लूटने और यहाँ की महान परम्पराओं को छिन्न-भिन्न करने के प्रयास किए हैं।विश्व की कई महान सभ्यताएँ समय के गर्क में खो गईए पर संत-महात्माओं ने अपने पराक्रम और बलिदान से भारतीय सभ्यता को सींचते हुए इसे जिन्दा रखा। हमारे वीर जवानों की बहादुरी ने जहां देश धरती को विदेशी आक्रांताओं से महफूज रखने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी वहीं हमारे महान संतो ने अधर्म का खात्मा कर धर्म की स्थापना की और यह सिलसिला अभी भी जारी है।इन संतों ने संसार में यह सन्देश दिया है कि जाति और धर्म से बड़ा मानवता का धर्म हैI सच्चे मन से की गई सेवा ही जीवन को सफल बनाती हैI इस संसार में भगवान संसार के हर प्राणी के दिल में रहता है, इसलिए हमें बुराई द्वेष आदि को छोड़कर एक सच्चा इंसान बनाना चाहिएI

मालाणी के महादेव के नाम से विख्यात पूज्य संत मोहनपुरी जी महाराज की तपोभूमि तारातरा बाड़मेर जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। बताते हैं कि लगभग 250 साल पूर्व जैतपुरी महाराज तारातरा गांव की पहाड़ियों में तपस्या करते थे। जिस गुफा में ये संत तपस्या करते थे उसके बाहर एक छोटा सा जल कुंड था। जहां गांव के लोग अपने मवेशियों को जल पिलाने लाते थे। एक दिन एक भील चांदाराम शिकार करते हुए जल की तलाश में संत की गुफा के बाहर पहुंचा। जब संत ने उसे देखा तो पूछा कि तुम कौन हो और क्या करते होI चांदाराम भील ने बताया कि मैं भील हूं और पशु-पक्षियों का शिकार करता हूं। संत ने उस भील को उपदेश दिया और कहा कि पाप मत करो, जीव हत्या महापाप है। संत की मधुर वाणी सुनकर उस भील का मन परिवर्तित हो गया और उसने वह घृणित कार्य छोड़ दिया। उसके घर में संपन्नता का वास हुआ। भील की संपन्नता को देख गांव में चर्चा होने लगी। जब गांव वालों ने भील से अचानक मिली समृद्धि के बारे मे पूछा तो उसने पहाड़ियों में बसे जैतपुरी महाराज का नाम बताया और उनके द्वारा दिया उपदेश कह सुनाया। भील के मुंह से जैतपुरी महाराज का गुणगान सुनकर गांव के लोगों का उनके पास आना-जाना ज्यादा ही हो गया। भील ने महाराज को कहा कि लोगों का आवागमन अब अधिक हो गया है। आप पहाड़ियों से तलहटी में विराजें तो सभी को आपका आशीर्वाद मिलेगा। यह सुनकर संत ने हां भर दी। भील एक स्थान पर एक कुटिया बनाताए किन्तु कुटिया को कोई रात्रि में नष्ट कर देता। यह तीन-चार बार हुआ तो भील ने जैतपुरी महाराज को सारी बात बताई। महाराज ने रात्रि में चौकीदारी करके देखा। रात्रि में गौमऋषि वहां प्रकट हुए और उन्होंने जैतपुरी महाराज को कहा कि आप पिछले जन्म में एक योगी थे। आपकी तपस्या का स्थान यह नहीं है। आपका स्थान इस स्थान से 3 किलोमीटर दक्षिण दिशा में गायों व बछड़ों के एक बाड़े के पास है। वहां लगभग 3 फीट गड्ढा खोदने पर आपको आपका साधना स्थल मिलेगा। यह कह कर ऋषि चले गए और सुबह लोगों के सहयोग से वहां की खुदाई की तो वहां जले कोयलों एवं राख के कण मिले। उसी स्थान पर आज के तारातरा मठ की स्थापना हुई। मठ में आज भी अखण्ड अग्नि प्रज्ज्वलित रहती है और उसे राजस्थानी भाषा में "धूणा" कहते हैं। इस मठ ने समरसता का संदेश गुंजाया है। भील चांदाराम की मृत्यु के बाद उसका भी "धूणा" महाराज जैतपुरी के धूणे के पास बनाया गया। सभी वर्ग के लोगों का इस धूणे पर आकर शीश झुकाना और अपनी समस्याओं से मुक्ति पाने की परम्परा आज भी कायम है। जैतपुरी महाराज के ब्राह्मलीन के बाद उनके शिष्य श्यामपुरी, जो बीकानेर राजपरिवार से थे, ने उनकी साधना आगे बढ़ाई। श्यामपुरी जी के बाद विजयपुरीए तेजपुरी एवं धर्मपुरी ने तारातरा मठ को पवित्र तप:स्थली बनाया। धर्मपुरी जी के शिष्य, थे मोहनपुरी जी। मोहनपुरी जी ने तारातरा मठ का संपूर्ण विकास कराया है। गिरनार, आबू, काशी एवं अनेक स्थानों पर रहते हुए मोहनपुरी जी ने अपना अध्ययन पूर्ण किया। तारातरा मठ का विकास भक्तों के चढ़ावे से आरंभ किया गया था। मोहनपुरी जी ने अपने शिष्यों को हिन्दू धर्म प्रचार, गो सेवा एवं मानव परोपकार के लिए कार्य सौंपा है। तारातरा मठ की ओर से फसल खराब होने वाले वर्ष में गरीब

International Journal in Management and Social Science
Volume 9 Issue 01,January 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 6.319
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

किसानों की पुत्रियों के विवाह तक का कार्य सम्पन्न किया जाता है। बाड़मेर में एक विद्यालय की स्थापना की गई है जिसका नाम मोहन बाल निकेतन रखा गया है। वहां प्रारंभिक से माध्यमिक कक्षा तक की शिक्षा दी जाती है। इस मठ द्वारा जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर सियाणी गांव में भी एक विद्यालय बनवाया गया है। जहां गांव के बाल-बालिकाएं शिक्षा ग्रहण करते हैं। मोहनपुरी एवं प्रतापपुरी जी ने जिला मुख्यालय से 3 किलोमीटर दूर लंगेरा गांव में एक अन्य विद्यालय आरंभ कराया और बाड़मेर-जोधपुर सीमा पर स्थित कल्याणपुर गांव में भी एक विद्यालय का निर्माण करवाया है। श्री मोहन गोशाला के नाम से एक विशाल गोशाला स्थापित कीए जिसमें इस वक्त 450 गायों की सेवा हो रही है। इन्हीं संतों द्वारा गांव-गांव, ढाणी-ढाणी में नशा मुक्ति का अभियान चलाया जाता है। हाल ही में जसदेर धाम की स्थापना कराई गई है ।

एक सच्चे संत के रूप में भगवान हमेशा ही धरत पर आते रहे हैं और लोगों को इंसानियत का पाठ समझाते रहे हैं।[6]भारतवर्ष की भूमि खुद ही इन महान संतो की गाथा ब्यान करती है। आओ मिलकर दिल से शुक्र और शत शत नमन करें उन महान संतों का जिनकी वजह से हम ज़िन्दगी जीने का अर्थ और उद्देश्य समझे हैं।

सन्दर्भ-

1. हिंदी शब्दकोश, रामप्रकाश सक्सेना
2. हिन्दू धर्मकोश, डॉ राजबली पाण्डेय, हिंदी समिति प्रभाग लखनऊ
3. ऐतिहासिक स्थानावली, विजेयेंद्र कुमार माथुर , राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
4. भारतीय संस्कृति के परिशीलन में रामचरितमानस , डॉ कृष्ण कुमार शर्मा, शारदा संस्कृत संसथान, वाराणसी
5. आधुनिक राजस्थान का वृहत इतिहास, डॉ राम प्रसाद व्यास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी
6. राजस्थान के संत महात्मा, सागरमल शर्मा, बाबा साहब आप्टे समिति, दिल्ली